



# माँ वैष्णो देवी: तीन पिंडियों में समाहित आदिशक्ति की महिमा

## त्रिकूट पर्वत पर विराजमान माता का पावन धाम, जहां दर्शन के लिए उमड़ते हैं लाखों श्रद्धालु

जम्मू-कश्मीर के रियासी जिले में त्रिकूट पर्वत पर स्थित माँ वैष्णो देवी का धाम देश के प्रमुख तीर्थस्थलों में शामिल है। कटरा से शुरू होने वाली श्रद्धा और भक्ति से भरी यात्रा भक्तों को माता के पवित्र भवन तक पहुंचाती है। यहां प्राकृतिक गुफा में विराजमान माता के दर्शन के लिए देश-विदेश से श्रद्धालु वर्षभर पहुंचते हैं। भक्तों की मान्यता है कि सच्चे मन से माँ को पुकारने वाले की प्रार्थना वे अवश्य सुनती हैं।



### माता की तपस्या व पवित्र गुफा

धार्मिक मान्यता के अनुसार, माता वैष्णो देवी ने धर्म की रक्षा और मानव कल्याण के लिए पृथ्वी पर अवतार लिया। प्रचलित कथा में उन्हें भगवान विष्णु की शक्ति का स्वरूप माना गया है। कहा जाता है कि माता ने त्रिकूट पर्वत की गुफा में तपस्या की और यहीं उनका पवित्र धाम स्थापित हुआ। माता के दर्शन का स्वरूप इस मंदिर को विशिष्ट बनाता है। यहां देवी की पारंपरिक प्रतिमा के स्थान पर तीन प्राकृतिक पिंडियां विराजमान हैं। श्रद्धालु इन्हें महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती की शक्तियों का प्रतीक मानते हैं। तीनों पिंडियां आदिशक्ति के विविध स्वरूपों और सृजन, पालन तथा शक्ति के भाव को प्रकट करती हैं।

### भैरवनाथ-श्रीधर की कथा

माता वैष्णो देवी की कथा में भैरवनाथ का प्रसंग विशेष महत्व रखता है। लोकमान्यता के अनुसार, भैरवनाथ ने माता का पीछा किया। अंततः माता ने त्रिकूट पर्वत की गुफा में उसका वध किया। बाद में उसे क्षमा करते हुए माता ने वरदान दिया कि उनके दर्शन के बाद भैरव बाबा के दर्शन करने पर ही यात्रा पूर्ण मानी जाएगी। पवित्र गुफा की खोज से जुड़ी कथा में पंडित श्रीधर का उल्लेख मिलता है। मान्यता है कि माता ने उन्हें दर्शन देकर अपने धाम का मार्ग बताया। यह प्रसंग आज भी श्रद्धालुओं के बीच गहरी आस्था के साथ सुनाया जाता है।

## माँ ज्वाला देवी: जहां अग्नि की लपटों में होते हैं माँ के दर्शन



### शक्तिपीठ की अनूठी महिमा, सदियों से प्रज्वलित प्राकृतिक ज्योतिषा और अटूट श्रद्धा का केंद्र

हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में स्थित माँ ज्वाला देवी का मंदिर देश के प्रमुख शक्तिपीठों में शामिल है। यह मंदिर अपनी अनूठी धार्मिक मान्यता और प्राकृतिक रूप से प्रज्वलित ज्योतिषों के लिए प्रसिद्ध है। यहां माँ की प्रतिमा के बजाय धरती से निकलने वाली अग्नि की लपटों को देवी का स्वरूप मानकर पूजा जाता है। यही विशेषता इस शक्तिपीठ को देश के अन्य देवी मंदिरों से अलग पहचान देती है।

### माता सती की जिज्ञा से जुड़ी मान्यता

पौराणिक मान्यता के अनुसार, भगवान शिव जब माता सती के पवित्र शरीर को लेकर विचरण कर रहे थे, तब सृष्टि के संतुलन के लिए भगवान विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से उनके शरीर के विभिन्न अंगों को अलग कर दिया। मान्यता है कि माता सती की जिज्ञा इसी स्थान पर गिरी थी। इसी कारण यह स्थान शक्तिपीठ के रूप में प्रतिष्ठित हुआ और यहां माँ ज्वाला देवी की आराधना होने लगी। मंदिर में प्राकृतिक रूप से निकलने वाली नौ ज्योतिषों को देवी के विभिन्न स्वरूपों का प्रतीक माना जाता है। इनमें महाकाली, अन्नपूर्णा, चंडी, हिंगलाज, विद्यावासिनी, महालक्ष्मी, सरस्वती, अंबिका और अंजी देवी के नाम प्रमुख हैं। इन ज्योतिषों के दर्शन के लिए वर्षभर श्रद्धालु यहां पहुंचते हैं। अग्नि की लपटों के सामने शीश झुकाते भक्तों के लिए यह केवल धार्मिक यात्रा नहीं, बल्कि आस्था और आध्यात्मिक अनुभूति का अवसर भी है।

### अकबर और भक्त ध्यानु की कथा

माँ ज्वाला देवी से जुड़ी अनेक लोककथाएं प्रचलित हैं। इनमें मुगल सम्राट अकबर और भक्त ध्यानु की कथा विशेष रूप से सुनाई जाती है। लोकमान्यता के अनुसार, अकबर ने मंदिर की ज्योति की शक्ति को परखने का प्रयास किया था, लेकिन अंततः उस मॉ की महिमा के सामने नतमस्तक होना पड़ा। यह कथा श्रद्धालुओं के बीच पीढ़ियों से सुनाई जाती रही है। इसे धार्मिक लोकपरंपरा के रूप में देखा जाता है।

### नवरात्र में उमड़ती है श्रद्धा

चैत्र और शारदीय नवरात्र के दौरान मंदिर में विशेष उत्साह रहता है। देश के विभिन्न हिस्सों से श्रद्धालु माँ के दर्शन करने पहुंचते हैं। मंदिर परिसर में गुंजते जयकारे, पूजा-अर्चना और भक्ति का वातावरण पूरे क्षेत्र को आध्यात्मिक रंग में रंग देता है। माँ ज्वाला देवी का शक्तिपीठ भारतीय धार्मिक परंपरा में प्रकृति और आस्था के अद्भुत संगम का प्रतीक है। यहां प्रज्वलित ज्योतिषा भक्तों के लिए केवल आग्नि की लपेट नहीं, बल्कि माँ की उपस्थिति और अटूट विश्वास का प्रतीक हैं। यही विश्वास इस प्राचीन तीर्थ की महिमा को आज भी जीवंत बनाए हुए है।

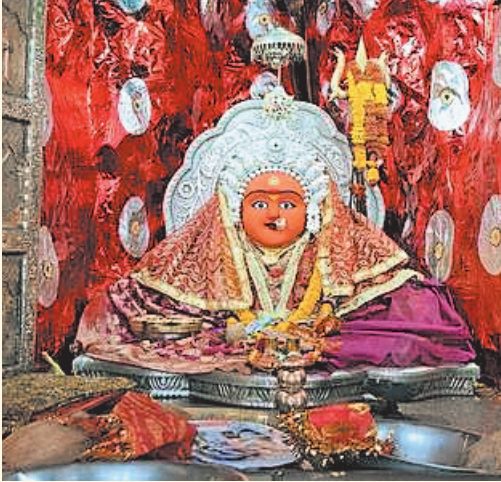
## माँ वैष्णो देवी का धाम भारतीय आस्था और साधना का संगम

## देवास की माँ चामुंडा भवानी टेकरी पर विराजमान शक्ति की गाथा

मध्यप्रदेश के मालवा अंचल में स्थित देवास की पहचान माँ चामुंडा और माँ तुलजा भवानी की टेकरी से है। लगभग तीन सौ फीट ऊंची पहाड़ी पर स्थित यह स्थल श्रद्धालुओं की गहरी आस्था का केंद्र है। धार्मिक मान्यता के अनुसार, यहां देवी के दो स्वरूप विराजमान हैं। बड़ी माता के रूप में माँ तुलजा भवानी और छोटी माता के रूप में माँ चामुंडा भवानी की पूजा की जाती है। दोनों मंदिरों के कारण यह टेकरी देवास की धार्मिक और सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गई है।

### संतान की कामना और प्राचीन परंपराएं

टेकरी से जुड़ी एक प्रमुख धार्मिक मान्यता संतान की कामना के लिए पान चढ़ाने की है। श्रद्धालु माँ तुलजा भवानी को पांच पान अर्पित करते हैं। स्थानीय मान्यता के अनुसार, यदि चढ़ाए गए पान भक्त की झोली में गिरते हैं, तो इसे देवी की कृपा का शुभ संकेत माना जाता है। मनोकामना पूरी होने पर श्रद्धालु दोबारा मंदिर पहुंचकर पूजा-अर्चना करते हैं। एक अन्य मान्यता के अनुसार, माँ तुलजा भवानी सुबह बालिका, दोपहर में युवती और शाम को बुढ़ा के स्वरूप में दर्शन देती हैं। ये परंपराएं श्रद्धालुओं की आस्था से जुड़ी हुई हैं। देवास टेकरी के इतिहास को लेकर कई कथाएं प्रचलित हैं। माना जाता है कि यह मंदिर कई सौ वर्ष पुराना है। परमार और बाद में मराठा शासकों ने इसके विकास में योगदान दिया। एक मान्यता के अनुसार, देवास रियासत के राजा ने माँ को अपनी कुलदेवी के रूप में स्वीकार किया था। एक अन्य कथा में माँ चामुंडा को नगर की रक्षक देवी माना गया है, जिन्होंने संकट के समय अपने उग्र स्वरूप में देवास की रक्षा की।



### नवरात्रि में चौबीस घंटे दर्शन

शारदीय नवरात्रि के दौरान माता टेकरी पर श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ जाती है। माँ चामुंडा और माँ तुलजा भवानी के दर्शन के लिए बड़ी संख्या में भक्त पहुंचते हैं। दोनों मंदिर नवरात्रि में चौबीस घंटे खुले रहते हैं, जिससे श्रद्धालु दिन-रात दर्शन कर सकते हैं। भक्त पूजा-अर्चना और आरती में शामिल होकर परिवार की सुख-समृद्धि, खुशहाली और संतान प्राप्ति की कामना करते हैं। टेकरी पर करीब एक किलोमीटर लंबा भक्त मार्ग है, जिसकी शुरुआत माँ तुलजा भवानी मंदिर से होती है। मार्ग में विभिन्न देवस्थलों के दर्शन करते हुए श्रद्धालु माँ चामुंडा मंदिर पहुंचते हैं। यहां हनुमानजी और कालभैरव की भी पूजा की जाती है।

### छप्पन भोग और धार्मिक महत्व

मंदिर में श्रद्धालु नारियल, चुनरी, पान और सुहग की सामग्री अर्पित करते हैं। कुछ भक्त बोलने या चलने में परेशानी से राहत की कामना के लिए चांदी की जोभ या पैरों की प्रतिकृति चढ़ाते हैं। देवी को छप्पन भोग लगाया जाता है, जिसमें विभिन्न व्यंजन, पांच तरह के फल और मीठे भजिये शामिल होते हैं। मनोकामना मँगते समय उड़टा स्वरितक बनाने और इच्छा पूरी होने पर सीधा स्वरितक बनाने की परंपरा भी प्रचलित है। माता टेकरी के जल से खारी में राहत मिलने की स्थानीय मान्यता है, हालांकि इसकी वैज्ञानिक पुष्टि नहीं हुई है। देवास की यह टेकरी केवल धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत भी है। यहां विभिन्न समुदायों के लोग श्रद्धा के साथ पहुंचते हैं। आधुनिकता के दौर में यह स्थल लोगों को अपनी परंपराओं और सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ता है। नवरात्रि में चौबीस घंटे खुले रहने वाले मंदिर और पहाड़ी पर दर्शन के लिए उमड़ते श्रद्धालु माँ के प्रति अटूट आस्था का प्रतीक हैं।

कटरा से भवन तक की यात्रा धैर्य, संकल्प और विश्वास का प्रतीक है। मार्ग में गुंजते जयकारे, भजन और श्रद्धालुओं का उत्साह वातावरण को भक्तिमय बना देते हैं। वर्ष 1986 में श्री माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड की स्थापना के बाद तीर्थयात्रियों की सुविधाओं और यात्रा प्रबंधन को व्यवस्थित करने के

प्रयास हुए। माँ वैष्णो देवी का धाम भारतीय आस्था, आध्यात्मिकता और सांस्कृतिक परंपरा का जीवंत प्रतीक है। यहां की यात्रा भक्तों को विश्वास, समर्पण और आत्मबल का संदेश देती है। त्रिकूट पर्वत पर विराजमान माता का यह पावन स्थल आज भी करोड़ों लोगों की श्रद्धा का केंद्र बना हुआ है।



मुंबई की पहचान केवल समुद्र, कारोबार और चमकती इमारतों से नहीं है। इस महानगर की जड़ों में लोकआस्था और परंपराओं की भी गहरी छाप है। इन्हीं परंपराओं के केंद्र में विराजमान हैं माँ मुंबादेवी, जिन्हें मुंबई की अधिष्ठात्री देवी माना जाता है। प्रचलित मान्यता है कि शहर का नाम भी उन्हीं के नाम से विकसित हुआ। दक्षिण मुंबई के भुलेश्वर क्षेत्र

## माँ मुंबादेवी: जिनके नाम से पहचानी जाती है मायानगरी मुंबई

## कोली समाज की आराध्य देवी से महानगर की पहचान तक, सदियों पुरानी आस्था का केंद्र है मुंबादेवी मंदिर

में स्थित मुंबादेवी मंदिर आज भी श्रद्धालुओं की अटूट आस्था का प्रमुख केंद्र है। **कोली समाज की आराध्य देवी**: माँ मुंबादेवी का संबंध मुंबई के मूल निवासी माने जाने वाले कोली मछुआरा समुदाय की आस्था से गहराई से जुड़ा है। समुद्र से जीवन-यापन करने वाले इस समुदाय के लिए माँ सुरक्षा, समृद्धि और संकटों से रक्षा का प्रतीक रही हैं। समुद्र की अनिश्चित परिस्थितियों के बीच देवी की आराधना उनके सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बनी। माँ मुंबादेवी से जुड़ी लोककथाओं में मुंबकर नामक राक्षस का उल्लेख मिलता है। प्रचलित धार्मिक मान्यता के अनुसार, अत्याचार से परेशान लोगों की रक्षा के लिए देवी ने उसका

वध किया और क्षेत्र में शांति स्थापित की। इसी आख्यान से देवी की महिमा और उनके नाम की परंपरा जुड़ी हुई मानी जाती है। यह कथा स्थानीय लोकविश्वास के रूप में विकसित हुई, **पुराने मंदिर से वर्तमान धाम तक**: माँ मुंबादेवी की पूजा की परंपरा मुंबई के आधुनिक महानगर बनने से बहुत पुरानी मानी जाती है। समय के साथ बस्तियों, बाजारों और बंदरगाह के आसपास नगर का विस्तार हुआ, लेकिन देवी के प्रति श्रद्धा बनी रही। मंदिर के इतिहास के अनुसार, वर्तमान मंदिर 1737 में भुलेश्वर के जेवरी बाजार क्षेत्र में स्थापित हुआ। आज यह इलाका मुंबई के व्यस्त व्यापारिक क्षेत्रों में शामिल है। बाजारों की हलचल के बीच स्थित मंदिर श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक शांति और आस्था से जुड़ने का अवसर देता है। यहां स्थानीय निवासियों के साथ देश के विभिन्न हिस्सों से आने वाले भक्त भी दर्शन करते हैं। धार्मिक पर्वों और विशेष अवसरों पर मंदिर में

श्रद्धालुओं की चहल-पहल बढ़ जाती है। **महानगर की सांस्कृतिक पहचान**: मुंबई समय के साथ देश की आर्थिक राजधानी और विविध संस्कृतियों के संगम के रूप में विकसित हुई, लेकिन माँ मुंबादेवी से जुड़ी आस्था आज भी उसके पुराने सांस्कृतिक स्वरूप की याद दिलाती है। मंदिर उस दौर की स्मृति संजोए हुए है, जब स्थानीय समाज का जीवन समुद्र, मछली पकड़ने और पारंपरिक देवी-देवताओं की पूजा से गहराई से जुड़ा था। माँ मुंबादेवी का महत्व केवल मंदिर तक सीमित नहीं है। वे मुंबई की ऐतिहासिक स्मृति, स्थानीय समाज की आस्था और शहर की सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक हैं। बदलते समय और विस्तार लेते महानगर के बीच उनका धाम यह संदेश देता है कि किसी शहर की असली पहचान उसकी इमारतों और आर्थिक प्रगति के साथ-साथ उसकी परंपराओं, इतिहास और सामूहिक विश्वास में भी बसती है।

## माँ कामाख्या: सृजन शक्ति और आस्था का अनूठा शक्तिपीठ

## नीलाचल पर्वत पर विराजती देवी की महिमा, जहां प्रकृति और स्त्री शक्ति की होती है आराधना



असम की राजधानी गुवाहाटी में नीलाचल पर्वत पर स्थित माँ कामाख्या मंदिर देश के प्रमुख शक्तिपीठों में से एक है। यह मंदिर केवल आस्था का केंद्र नहीं, बल्कि भारतीय शक्ति उपासना, तांत्रिक परंपरा और सृजन शक्ति का विशिष्ट प्रतीक भी है। यहां देवी की पूजा पारंपरिक प्रतिमा के बजाय प्राकृतिक शिलाखंड में स्थित योनि स्वरूप में होती है, जिसे सृष्टि की उत्पत्ति और जीवन की निरंतरता का प्रतीक माना जाता है।

### अंबुबाची मेला: प्रकृति-स्त्री शक्ति का उत्सव

माँ कामाख्या मंदिर की सबसे अनूठी परंपरा अंबुबाची मेला है, जो प्रतिवर्ष जून में आयोजित होता है। धार्मिक मान्यता है कि इस अवधि में देवी रजस्वला होती हैं। इसी कारण मंदिर के कपाट कुछ दिनों के लिए बंद रखे जाते हैं। निर्धारित अनुष्ठानों के बाद मंदिर फिर श्रद्धालुओं के दर्शन के लिए खोल दिया जाता है। यह परंपरा स्त्रीत्व, उर्वरता और प्रकृति की सृजन क्षमता के प्रति सम्मान का प्रतीक मानी जाती है। इस अवसर पर देशभर से साधु, साधक और श्रद्धालु पहुंचते हैं।

### सती की कथा से जुड़ा शक्तिपीठ

पौराणिक मान्यता के अनुसार, राजा दक्ष के यज्ञ में अपमानित होने के बाद माता सती ने अपने प्राण त्याग दिए थे। भगवान शिव उनके पवित्र शरीर को लेकर विचरण करने लगे। सृष्टि का संतुलन बनाए रखने के लिए भगवान विष्णु ने सुदर्शन चक्र से सती के शरीर के विभिन्न अंग अलग किए। मान्यता है कि माता सती का योनि भाग नीलाचल पर्वत पर गिरा था। इसी कारण यह स्थान शक्तिपीठ के रूप में प्रतिष्ठित हुआ। माँ कामाख्या का कामना, उर्वरता और सृजन शक्ति की अधिष्ठात्री देवी के रूप में पूजा जाता है। मंदिर का इतिहास प्राचीन धार्मिक मान्यताओं और ऐतिहासिक घटनाओं का संगम है। मध्यकाल में मंदिर को क्षति पहुंची थी। बाद में कोच राजवंश के राजा नरनारायण और उनके सेनापति चिलाराय के प्रयासों से 16वीं शताब्दी में इसका पुनर्निर्माण हुआ। मंदिर की विशिष्ट स्थापत्य शैली, गुंबद और नवकाशी असम की सांस्कृतिक विरासत की झलक प्रस्तुत करते हैं।

### दस महाविद्याओं और तांत्रिक साधना का केंद्र

मंदिर परिसर में दस महाविद्याओं से संबंधित विभिन्न देवी मंदिर भी हैं। तांत्रिक साधना की प्राचीन परंपराओं के कारण कामाख्या का विशेष महत्व है। यहां शक्ति को केवल पूजनीय देवी के रूप में नहीं, बल्कि समस्त सृष्टि के मूल आधार के रूप में देखा जाता है। माँ कामाख्या का शक्तिपीठ भारतीय संस्कृति की उस मान्यता को अभिव्यक्त करता है, जिसमें स्त्री शक्ति, प्रकृति और सृजन को दिव्यता का स्वरूप माना गया है। यही कारण है कि सदियों से नीलाचल पर्वत पर विराजमान माँ कामाख्या करोड़ों श्रद्धालुओं की अटूट आस्था का केंद्र बनी हुई हैं।

## अवतिका की आध्यात्मिक पहचान

## माँ हरसिद्धि और राजा विक्रमादित्य: आस्था शक्ति और समर्पण की अनूठी गाथा



मध्यप्रदेश की प्राचीन नगरी उज्जैन, जिसे अवतिका और महाकाल की नगरी के नाम से भी जाना जाता है, अपनी धार्मिक परंपराओं, ऐतिहासिक स्मृतियों और आध्यात्मिक चेतना के लिए विशेष पहचान रखती है। यहां स्थित माँ हरसिद्धि का मंदिर श्रद्धा का ऐसा केंद्र है, जहां देवी उपासना की प्राचीन परंपरा और राजा विक्रमादित्य से जुड़ी लोककथाएं आज भी जीवंत हैं। मंदिर के प्रांगण में खड़े विशाल दीपस्तंभ जब संख्या के समग्र सैकड़ों दीपों से जगमगाते हैं, तब वातावरण में एक अलौकिक आभा दिखाई देती है। यह दृश्य केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं, बल्कि सदियों से चली आ रही सांस्कृतिक विरासत की अनुभूति भी कराता है। माँ हरसिद्धि को शक्ति की अधिष्ठात्री देवी माना जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, उज्जैन का यह मंदिर प्रमुख शक्तिपीठों में शामिल है। देवी की उपासना से जुड़ी पौराणिक कथाएं बताती हैं कि शक्ति केवल संकटों का नाश करने वाली सामर्थ्य नहीं, बल्कि जीवन को दिशा देने वाली चेतना भी है। इसी कारण यहां आने वाले श्रद्धालु देवी के दर्शन में सुरक्षा, साहस, सुख और कल्याण की कामना करते हैं। मंदिर की विशिष्टता उसके धार्मिक महत्व के साथ उन परंपराओं में भी है, जिन्होंने पीढ़ियों तक लोगों की आस्था को संभल दिया है।

### विक्रमादित्य की अनन्य भक्ति

माँ हरसिद्धि और राजा विक्रमादित्य का संबंध उज्जैन की चर्चित धार्मिक लोकगाथाओं में से एक है। प्रचलित मान्यता के अनुसार, राजा विक्रमादित्य देवी के अनन्य भक्त थे। उनके समर्पण की कथा में वर्णन मिलता है कि वे माँ की कृपा प्राप्त करने के लिए बार-बार अपना मस्तक अर्पित करते थे और देवी की कृपा से उन्हें जीवनदान मिलता था। इस प्रसंग को ऐतिहासिक प्रमाण के बजाय लोकविश्वास और धार्मिक परंपरा के रूप में देखा जाना चाहिए। कथा का मूल भाव राजा की असाधारण भक्ति, त्याग और आराध्य के प्रति पूर्ण समर्पण में निहित है। विक्रमादित्य की स्मृति केवल एक भक्त राजा के रूप में नहीं, बल्कि न्यायप्रिय और प्रजावत्सल शासक की आदर्श छवि से भी जुड़ी है। भारतीय परंपरा में राजधर्म का अर्थ केवल शासन करना या विजय प्राप्त करना नहीं, बल्कि प्रजा की रक्षा, न्याय की स्थापना और लोककल्याण को सर्वोच्च प्राथमिकता देना भी रहा है। इस दृष्टि से विक्रमादित्य और माँ हरसिद्धि की कथा एक गहरा संदेश देती है। शक्ति की उपासना तभी सार्थक है, जब उससे व्यक्तित्व में साहस, विवेक, कर्तव्यनिष्ठा और दूसरों के प्रति उत्तरदायित्व का भाव विकसित हो। मंदिर के विशाल दीपस्तंभ इस आस्था को सुंदर प्रतीक प्रदान करते हैं। संख्या के समय जब दीप प्रज्वलित होते हैं, तो उनकी लौ अंधकार के बीच विश्वास की निरंतरता का संदेश देती है। इन दीपों के सामने खड़ा श्रद्धालु अपने जीवन की हरसिद्धि की नगरी में भक्ति और राजधर्म की यह गाथा आज भी प्रासंगिक है। विक्रमादित्य की लोकस्मृति और देवी की आराधना याद दिलाती है कि सच्ची शक्ति अहंकार में नहीं, समर्पण में है और सच्चा नेतृत्व अधिकार में नहीं, कर्तव्य के निर्वहन में है। यही उज्जैन की आध्यात्मिक विरासत का सार है, जो बदलते समय में भी अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है।